Topic: Importance of Curtain, Cushion & Colour in Interior decoration.

B.A. Part 1

Dr. Bandana Kumari
Guest lecturer
Home Science dept.
SNSRKS. College.
Saharsa

आन्तरिक गृहसज्जा में परदों का महत्व

घर की शोभा बढ़ाने तथा उसे आकर्षक एवं लुभावना बनाने में परदों का काफी महत्व है.

घर की बेकार कबाड़ को छिपाने, खिड़की-दरवाजों की शोभा बढ़ाने, कमरे का विभाजन करने, प्रकाश एवं वायु को रोकने और कमरों में एकान्त स्थापित करने में परदों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है. यह कमरे के अन्दर के दृश्य, व्यक्ति और वस्तुओं को गोपनीय रखते हैं. साथ ही गर्मी, सर्दी, लू एवं सूर्य के प्रकाश से हमारी रक्षा करते हैं. इनके द्वारा छोटा कमरा बड़ा प्रतीत होता है. इससे गर्म एवं ठण्डा वातावरण भी उत्पन्न किया जाता है. छत की ऊँचाई घटाई या बढ़ाई जा सकती है.

यह प्रायः महीन जाली, केसमेन्ट, हैण्डलूम, खद्दर के कपड़े के बनाए जाते हैं. खादी एवं हस्तकरघे वस्त्र के बने परदे भी अच्छे होते हैं. टिकाऊ परदे के लिए मजबूत कपड़ा होना आवश्यक होता है. केसमेन्ट का कपड़ा चित्रकारी के लिए उचित रहता है तथा जालीदार कपड़े पर पैचवर्क का काम सुन्दर प्रतीत होता है. सजावट के लिए परदे लगाने पर उसका रंग-रूप कमरे की सज्जा के अनुसार होना चाहिए. कपड़े का रंग पक्का होना चाहिए. सुन्दर दृश्यों वाले भाग में झीनी रचना के महीन परदे लगाना अच्छा रहता है. जिन दरवाजों एवं खिड़कियों से धूप एवं वायु का अधिक प्रवेश होता है, वहाँ पर भारी परदे लगाने से अनावश्यक धूप और वायु से रक्षा होती है. परदे का चयन करते समय कमरे की दीवारों एवं रंग को ध्यान में रखना चाहिए. खिड़की तथा दरवाजे के आकार के अनुसार परदे का आकार होना चाहिए. ठण्ड एवं लू से बचने के लिए खिड़की एवं दरवाजों पर पूरा परदा लगाया जाता है, जिसे शीतकाल में दिन के समय तथा गर्मी में रात के समय सरका दिया जाता है. दरवाजे वाली अलमारी पर उसके आकार का परदा लगाना चाहिए. ऊँचे कमरों में खिड़की एवं दरवाजों पर ऊपर की तरफ 30–40 सेमी चौड़ी झालर लगाकर परदे लगाने से कमरे की ऊँचाई कम लगती है. परदे का रंग कमरों की रंग-योजना, आकार, सम्पूर्ण सज्जा, प्रकाश स्थिति उपयोग और मौसम के अनुसार होनी चाहिए. एक कमरे की सभी खिड़कियों एवं दरवाजों पर एक ही रंग के परदे लगाना शोभायमान होता है. बड़े एवं प्रकाशयुक्त कमरों में गहरा रंग उपयुक्त होता है. परदे के कपड़े की डिजाइन को ध्यान में रखकर इसका चुनाव करना चाहिए. कमरों की दीवारों के चित्रित होने पर सादे परदे अधिक उपयुक्त होते हैं. छोटे कमरों में प्रिन्ट या फूल-पत्ती के परदे अच्छे लगते हैं. बड़ी तथा चौड़ी खिड़की पर बड़े-बड़े फूल-पत्ती या डिजाइन के परदे एवं छोटी-पतली एवं लम्बी खिड़कियों के लिए छोटे प्रिन्ट के परदे अधिक सुन्दर लगते हैं. बाथरूम, शौचालय तथा रसोईघर में प्लास्टिक के परदे लगाने चाहिए. बच्चों के कमरे में लगने वाले परदे पर पशु-पक्षी, गुड़िया, कार्टून आदि का पैचवर्क कर देने से कमरे में सजीवता आ जाती है. परदे के ऊपर छल्ले का प्रयोग करने से सरकाने में सुविधा रहती है. परदे के लिए स्प्रिंगदार लचीले तार भी प्रयोग किए जाते हैं. रसोईघर में अग्निसह परदे लगाने चाहिए.

आन्तरिक गृह-सज्जा में कुशन का महत्व

कुर्सी एवं सोफे की सजावट में कुशन का अधिक महत्व होता है. कुशन का प्रयोग बैठने में आराम और सुविधा देने के लिए किया जाता है जिससे टिककर अर्थात् पीठ सटाकर तथा पैर फैलाकर बैठने में आराम मिलता है. कुशन का रंग एवं आकार फर्नीचर की बनावट एवं रंग पर निर्भर करता है. इसकी बनावट एवं चयन फर्नीचर के साथ अनुरूपता लिए होना चाहिए. कुशन बनाते या खरीदते समय परदे के रंग एवं कमरे की सम्पूर्ण सज्जा को भी ध्यान में रखना चाहिए. छोटे फर्नीचर पर छोटा कुशन एवं बड़े फर्नीचर पर बड़े कुशन शोभायमान होते हैं. सोफे की पीठ के सहारे चौकोर, गोल या तिकोने कुशन लगाए जाते हैं. हल्के या सफेद रंगों का प्रयोग वाले कमरे में चटक रंग के कुशन की सुन्दरता बढ़ाने के लिए उन पर कढ़ाई या पेंटिंग कर देनी चाहिए. ऐपलीक कढ़ाई भी

कुशन पर अच्छी लगती है. कुशन कवर का कपड़ा दोनों तरफ एक-सी बनावट वाला एवं पक्के रंग का होना चाहिए.

आन्तरिक गृह सुसज्जा में रंगों का महत्व

प्रत्येक वस्तु की सुन्दरता रंगों के उचित मेल एवं रंग के सुन्दर ढंग से सजने पर निर्भर करती है. विभिन्न रंगों को स्थान, समय एवं परिस्थिति के अनुसार प्रयोग करने से वे अधिक सुन्दर एवं आकर्षक लगते हैं. प्रकाश की किरणों तथा लहरों की लम्बाई एवं स्पन्दन-दर भिन्न-भिन्न होती है, जो मस्तिष्क में भिन्न-भिन्न बोध कराती है और हमें भिन्न-भिन्न रंग दिखाई देते हैं, रंगों को देखने से मन मुग्ध होता है. रंगों के उचित मेल से जीवन में सरसता आती है, जिससे हमें सन्तुष्टि मिलती है. रंगों का प्रयोग व्यक्तिगत रुचि से सम्बन्धित है. फिर भी परिस्थिति, मौसम, उम्र, कमरे का आकार, कमरे का प्रयोग, कमरे का प्रकाश, फैशन, वातावरण आदि के अनुसार रंग शोभा देता है. पर्व-त्योहार पर चटक रंग के वस्त्र तथा चमकीले रंगों से सजा कमरा अच्छा लगता है. जहाँ अधिक गर्मी पड़ती है, वहाँ के कमरों का रंग हल्का तथा शीतलता प्रदान करने वाला होना चाहिए. ठण्डे देशों के कमरों में उष्णता प्रदान करने वाला रंग अच्छा लगता है. बड़े तथा प्रकाशयुक्त कमरों में चटक और गहरा रंग एवं छोटे तथा अंधेरे कमरे में सफेद या हल्का रंग प्रयुक्त करना चाहिए. बैठक के कमरे को भूरे, नीले, गुलाबी, कत्थई तथा भूरे-नीले रंग से सजाना चाहिए. आमोद-प्रमोद वाले कमरे में शान्ति की आवश्यकता पड़ती है. अतः उसमें हरा या नीला रंग उपयुक्त होता है. पूर्वी कमरों में अधिक प्रकाश तथा गर्मी रहती है. इसमें भड़कीले रंग जैसे—गुलाबी, पीला, नीला या आसमानी रंगों का प्रयोग करना चाहिए. पश्चिमी कमरों में शान्तिदायक रंगों का व्यवहार करना चाहिए. प्रत्येक रंग की अलग-अलग विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

पीले रंग—उत्तर दिशा वाले कमरों के लिए पीले रंग की सजावट उत्तम होती है, जो आशावादिता, सहानुभूति तथा प्रगतिसूचक होता है, साथ ही प्रकाश का द्योतक होता है. इसलिए अंधेरे में सूर्य के प्रकाश का आभास कराता है.

सुनहरा रंग—यह बाहरी सजावट जैसे—खिड़की के परदे के लिए उपयुक्त होता है. इससे अन्धकारयुक्त कमरे में प्रकाश हो जाता है.

नारंगी रंग—यह उत्साह, आशा, हिम्मत और अतिथि-सत्कार की भावना को जाग्रत करता है. इसे पीले, सफेद, लाल रंग से हल्का कर सजावट के उपयोग में लाया जाता है.

भूरा रंग—यह विशेषकर कार्निस, दीवार तथा कालीन को रंगने के काम में आता है तथा शिथिलता और नम्रता का द्योतक है.

लाल रंग—यह उष्णता का उत्पादक है. इसमें प्रफुल्लता, बड़प्पन, दिखावा और स्वागत करने वाला गुण होता है. जो पीले नारंगी और गुलाबी रंग के विभिन्न रंगों के साथ अच्छी तरह मेल खाता है, इसलिए इसका गलीचे में उपयोग किया जाता है.

गुलाबी रंग—यह सबसे अधिक नाजुक होता है, जिसकी सजावट कुछ ही भागों में अधिक शोभनीय होती है. जैसे—शृंगार-मेज, शीशा, परदे, मेजपोश तथा नर्सिंग रूम आदि.

बैंगनी रंग—यह राजसी रंग कहलाता है. इसका उपयोग छपाई, किनारी, चित्र लैम्पशेड तथा अन्य छोटी-छोटी सजावटों में किया जाता है.

नीला रंग—यह बड़प्पन एवं शिष्टाचारिता का प्रतीक है, जो सम्पूर्ण कमरे की सजावट में प्रयुक्त किया जाता है. इससे कमरे के विस्तृत होने का आभास होता है तथा यह शयन एवं भोजन कक्ष के लिए उपयोगी होता है.

हरा रंग—यह आरामदायक, शीतल और स्फूर्तिदायक होता है.

रंग-परियोजना

आन्तरिक गृह सज्जा में निम्नलिखित रंग-परियोजनाएँ हैं—

(1) **एकरंगी योजना**—एकरंगी योजना में कमरे के अन्दर की रंग-व्यवस्था को एक पूर्ण इकाई में आयोजित किया जाता है अर्थात् एक रंग लेकर विभिन्न मिलते-जुलते रंग बनाए जाते हैं, एक कमरे की विभिन्न दीवारों, फर्नीचर, फर्श तथा अन्य सजावट-सामग्रियों में इनका प्रयोग किया जाता है. इनका क्रियान्वयन आसान होता है और कमरा भी बड़ा प्रतीत होता है. फर्नीचर तथा अपहोलस्ट्री पर उसी रंग के हल्के शेड का प्रयोग करना चाहिए.

(2) **समदर्शी योजना**—समदर्शी योजना में कमरे के अन्दर की रंग-व्यवस्था में किसी एक रंग को आधार के रूप में चुन लिया जाता है तथा सम्पूर्ण कमरे को उसी परिवार के अन्य रंगों से सजाया जाता है. चुने गए प्रथम रंग को प्रमुख रंग मानकर उसके शेडों को दीवारों पर प्रयोग किया जाता है. दूसरे रंग को सहयोगी रंग मानकर उसका कोई शेड फर्श पर, गलीचे, दरी आदि में प्रयोग किया जाता है. तीसरे रंग को शेड, परदों तथा फर्नीचर के रंग में प्रयोग किया जाता है. इसमें रंग-चक्र के किसी भी रंग के समीप वाले रंग का व्यवहार किया जाता है.

(3) **विपरीत रंग-योजना**—रंग चक्र द्वारा विभिन्न प्रकार की रंग-योजना तैयार की जाती है. चित्रानुसार रंग-चक्र में एक-दूसरे के ठीक सामने के रंग तथा लाल और हरा अथवा नीला और केसरी रंग को प्रमुख मानकर उसका चिह्न या शेड

अन्य दीवारों पर किया जाता है. गौण रंग को सहयोगी रंग मानकर फर्श या अन्य सजावटें की जाती हैं.

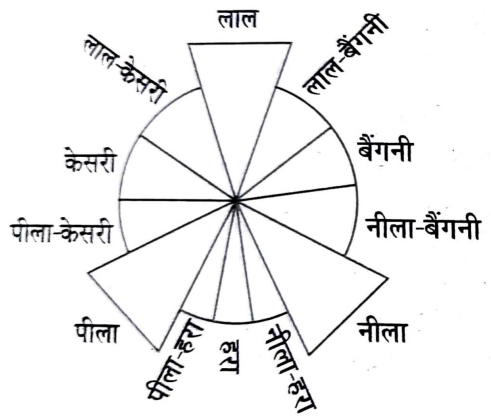

(4) **त्रिकोणीय योजना**—रंग-चक्र में बराबर रंग-चक्र दूरी के तीन रंग सजावट में चुने जाते हैं, तो उसे त्रिकोणीय रंग योजना कहते हैं. जैसे—(क) हरा, केसरी, बैंगनी. (ख) पीला, लाल, नीला. (ग) पीला, केसरी, लाल, (घ) बैंगनी, नीला, हरा. इन तीनों के शेड विभिन्न स्थानों पर प्रयोग किये जाते हैं.

(5) **चौरंगी योजना**—रंग चक्र में बराबर दूरी पर के चार रंगों की योजना को चौरंगी योजना कहते हैं. जैसे—(क) पीला, लाल-केसरी, बैंगनी, नीला-हरा. (ख) हरा, नीला-बैंगनी, लाल, पीला, केसरी. चौरंगी योजना को एक रंग की अधिकतर दीवारों पर प्रयोग किया जाता है. अन्य तीनों रंगों का प्रयोग दरी-कालीन, फर्नीचर के कपड़े, परदे आदि पर किया जाता है.